ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v4i3.242

शेखावाटी क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में झुंझुनू का ऐतिहासिक अध्ययन

रोहिताश कुमार

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, झुन्झनू, 333001

Email id- rohitaskumarjhunjhunu@gmail.com

सारांश

झुंझुनू जिला राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा है। इस क्षेत्र का इतिहास अत्यंत प्राचीन माना जाता है, जिसका संबंध सिंधु घाटी सभ्यता के समय से जोड़ा जाता है, जब खेतड़ी क्षेत्र से तांबे का व्यापार होता था। शेखावाटी क्षेत्र का नामकरण वीर शेखा जी के नाम पर हुआ, जिन्होंने विक्रम संवत 1506 में अमरसर से अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। उनके वंशज शेखावत कहलाए और उन्होंने इस क्षेत्र में राजनीतिक शक्ति का विस्तार किया। मध्यकालीन इतिहास में इस क्षेत्र पर प्रतिहार, चौहान तथा कायमखानी शासकों का भी प्रभाव रहा। कायमखानियों ने झुंझुनू और फतेहपुर में नवाबी शासन स्थापित किया, जो लगभग दो शताब्दियों तक कायम रहा। बाद में शेखावतों ने अपनी शक्ति और संगठन के बल पर इस क्षेत्र पर अधिकार स्थापित कर शेखावाटी को एक प्रमुख राजनीतिक इकाई के रूप में विकसित किया।

मुगल काल में शेखावत शासकों ने मुगल सम्राटों के साथ सहयोगात्मक संबंध स्थापित कर अपनी प्रतिष्ठा और राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ किया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य के पतन के साथ क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ। अंग्रेजी शासन काल में यद्यपि शेखावाटी पर प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासन नहीं था, तथापि जयपुर राज्य के माध्यम से अंग्रेजों का प्रभाव बना रहा। इस काल में किसान आंदोलनों और सामाजिक संघर्षों ने राजनीतिक चेतना को बढ़ावा दिया। स्वतंत्रता आंदोलन में भी इस क्षेत्र के नेताओं और जनता ने सक्रिय भूमिका निभाई। अंततः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 30 मार्च 1949 को राजस्थान के गठन के साथ झुंझुनू जिला एक प्रशासनिक इकाई के रूप में स्थापित हुआ। इस प्रकार झुंझुनू का इतिहास राजनीतिक परिवर्तन, सामाजिक संघर्ष और सांस्कृतिक विकास की समृद्ध परंपरा को प्रतिबिंबित करता है।

मुख्य शब्द: *झुंझुनू, शेखावाटी, शेखावत वंश, कायमखानी शासन, राजस्थान का इतिहास, किसान आंदोलन, स्वतंत्रता संग्राम, जयपुर राज्य, राजस्थान निर्माण।*

भूमिका

राजस्थान का शेखावाटी क्षेत्र अपने समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक वैभव के लिए प्रसिद्ध रहा है। झुंझुनू इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण जनपद है, जिसका इतिहास प्राचीन काल से ही विविध राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का साक्षी रहा है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि यह क्षेत्र सिंधु घाटी सभ्यता के समय से ही व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है, क्योंकि खेतड़ी क्षेत्र से तांबे का व्यापार इस क्षेत्र के माध्यम से होता था।

मध्यकाल में यह क्षेत्र विभिन्न राजवंशों के अधीन रहा, जिनमें प्रतिहार, चौहान तथा कायमखानी प्रमुख थे। कायमखानी शासकों ने झुंझुनू और फतेहपुर में नवाबी शासन स्थापित किया, जिसने इस क्षेत्र की प्रशासनिक संरचना को विकसित किया। बाद में शेखावत वंश के उदय के साथ शेखावाटी क्षेत्र ने एक नई राजनीतिक पहचान प्राप्त की। वीर शेखा जी और उनके वंशजों ने इस क्षेत्र में अपना प्रभाव स्थापित किया और धीरे-धीरे शेखावाटी को एक संगठित शक्ति के रूप में विकसित किया।

मुगल काल में शेखावत शासकों ने मुगल दरबार के साथ सहयोगात्मक संबंध स्थापित किए, जिससे इस क्षेत्र की राजनीतिक स्थिति और अधिक सुदृढ़ हुई। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य के पतन और अंग्रेजी सत्ता के उदय का प्रभाव शेखावाटी क्षेत्र पर भी पड़ा। अंग्रेजी शासन के

दौरान किसानों और जागीरदारों के बीच संघर्ष तथा स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियों ने क्षेत्र की सामाजिक और राजनीतिक चेतना को प्रभावित किया। इस प्रकार झुंझुनू का इतिहास प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल की घटनाओं का एक महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो क्षेत्रीय इतिहास के साथ-साथ राजस्थान के व्यापक इतिहास को समझने में भी सहायक है।

शोध के उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य झुंझुनू क्षेत्र के ऐतिहासिक विकास और उसके प्रमुख चरणों का अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत शेखावाटी क्षेत्र के नामकरण तथा शेखावत वंश के उदय का विश्लेषण किया गया है। साथ ही झुंझुनू क्षेत्र में कायमखानी और शेखावत शासकों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त मुगल और अंग्रेजी शासन काल में क्षेत्र की राजनीतिक स्थिति, शेखावाटी में हुए किसान आंदोलनों और स्वतंत्रता संग्राम की भूमिका का भी विश्लेषण किया गया है तथा राजस्थान के निर्माण के बाद झुंझुनू जिले के प्रशासनिक विकास को समझने का प्रयास किया गया है।

प्राचीन एवं प्रारंभिक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

झुंझुनू का इतिहास शेखावाटी क्षेत्र के व्यापक इतिहास से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। यह क्षेत्र सिंधु घाटी सभ्यता के काल से ही व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र रहा, विशेषतः खेतड़ी से तांबे के निर्यात के कारण।अतः इस क्षेत्र का इतिहास सिंधु घाटी जितना ही पुराना है।
शेखावाटी जनपद का इतिहास रामायण और महाभारत काल से जुड़ा हुआ है, जहां इसका उल्लेख 'मरुकान्तार' और 'मत्स्य' के नाम से मिलता है। प्राचीन काल में, प्रतिहार वंश ने इस जनपद पर शासन किया। उनकी शक्ति क्षीण होने के बाद, चौहान वंश ने लगभग 10वीं सदी के अंत में इस प्रदेश पर अधिकार कर लिया और शाकम्भरी को अपनी राजधानी बनाई। चौहानों का शासन यहां लंबे समय तक चला।उनके पराभव के बाद, निरबाण, तंवर, जौड़, चंदेल आदि वंशों ने इस जनपद पर अधिकार स्थापित किया।

शेखावाटी का नामकरण एवं शेखावत वंश का उदय

शेखावाटी का नाम वीर शेखा जी के नाम पर पड़ा, जिन्होंने विक्रम संवत 1506 में अमरसर से स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। उनके वंशज शेखावत कहलाए। शेखावतों ने धीरे-धीरे अपने राज्य का विस्तार किया और विक्रम संवत 1787 में झुंझुनूं तथा 1788 में सीकर पर अधिकार स्थापित किया।जो उनके शौर्य, बल और पराक्रम का प्रमाण है। शेखाजी एवं उनके वंशजों ने अपने राज्य का विस्तार किया यह क्षेत्र आगे चलकर शेखावाटी नाम से से प्रसिद्ध हुआ ।बांकीदास की ख्यात में सर्वप्रथम 'शेखावाटी' शब्द का उल्लेख मिलता है, जिससे इस क्षेत्र की ख्याति का अनुमान लगाया जा सकता है।
बांकीदास के बाद, कर्नल डब्ल्यू एन गार्डनर ने सन 1803 में शेखावाटी शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद, कर्नल टाड ने सर्वप्रथम शेखावाटी का इतिहास लिखा जिसमें उन्होंने शेखावाटी के गौरवशाली अतीत को विस्तार से वर्णित किया।

कायमखानी शासन और नवाबी व्यवस्था

15वीं शताब्दी के अंत में, जौड़चौहानों को समाप्त करके, चौहानों की एक नवमुस्लिम क्यामखानी शाखा ने झुंझुनूं और फतेहपुर की दो नबाबियां स्थापित कीं। शेखावाटी जनपद में पूर्व मध्यकाल में कायमखानी शासन था। क्याम खां रासो में चौहानों की एक लंबी परंपरा का वर्णन हुआ है, जिसमें चाहुवान उत्पन्न हुए और उनके वंशज चौहान कहलाए। ददरेवा के शासक मोटेराव के यहां कायमखानियों के आदि पुरुष करमचन्द का जन्म हुआ। दिल्ली के सुल्तान फिरोज तुगलक ने 1383 ई. में ददरेवा पर आक्रमण किया और करमचन्द को पकड़कर मुसलमान बना लिया, जिसका नाम क्याम खां रखा गया। क्याम खां कालान्तर में हिसार का शासक बना और अपने बाहुबल से उसने राज्य का विस्तार किया। क्याम खां के वंशज क्यामखानी कहलाए। क्याम खां के पांच पुत्र हुए - ताज खां, मोहम्मद खां, कुतुब खां, इकतियार खां और मोमन खां।
ताज खां हिसार का नबाब हुआ और सं.1477 से 1503 तक शासन किया।उसकी मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र फतेह खां हिसार में पिता का उत्तराधिकारी हुआ। ताज खां का भाई मोहम्मद खां हांसी में रहा। बाद में बहलोल लोदी ने सुल्तान बनने के बाद कायमखानियों को हांसी और हिसार से निकाल दिया। चाचा भतीजा भटकते-भटकते राजस्थान के उत्तरी पूर्वी भाग में आए और दोनों ने इस प्रदेश में अधिकार करके दो कायमखानी नबाबियां स्थापित कीं। संवत 1508 में फतेहपुर की नबाबी की स्थापना से कुछ वर्ष पूर्व, मोहम्मद खां ने झुंझुनूं नगर को सुव्यवस्थित ढंग से बसाकर नवाबी की स्थापना की। इस प्रकार, लगभग 180 वर्ष तक फतेहपुर वाटी और झुंझुनूंवाटी पर कायमखानियों का शासन रहा। बाद में, झुंझुनूं पर शार्दूलसिंह ने अपना अधिकार जमा लिया। नरहड़वाटी भी शेखावाटी का एक भाग है, जो झुंझुनू से उत्तरपूर्व में स्थित है। पंडित झाबर मल शर्मा ने नरहड़ के नवाबों के बारे में लिखा है कि झुन्झुनू-फतेहपुर के लगभग ही नागड़ पठानों ने नरहड़ में अपनी नबाबी की नींव डाली।

नरहड़ पर कुल 10 नवाबों का अधिकार रहा। बाद में, संवत 1494 में नरहड़ का पट्टा शार्दूल सिंह शेखावत के नाम कर दिया गया।शेखावतों ने नरहड़ पर आक्रमण किया और नरहड़ के अंतिम नवाब अब्दुल करीम खां को परास्त कर नरहड़ पर अधिकार कर लिया। कायमखानियों ने झुंझुनू एवं फतेहपुर में नवाबी शासन स्थापित किया, जो लगभग 180 वर्षों तक चला। इस शासन ने क्षेत्र की प्रशासनिक संरचना को व्यवस्थित किया।

शेखावतों का प्रभुत्व एवं राजनीतिक विस्तार

कायमखानी शासन के पश्चात शेखावतों ने अपनी शक्ति के बल पर इस क्षेत्र पर अधिकार स्थापित किया। शेखावत वंश के संस्थापक महाराव शेखाजी का जन्म विक्रम संवत 1490 में आश्विन शुक्ला दशमी को हुआ था। उनके पिता मौकलजी को शेखबुरहान की कृपा से शेखाजी जैसा पुत्र प्राप्त हुआ। मौकलजी के स्वर्गवास के बाद, 12 वर्ष की उम्र में शेखाजी नाण, अमरसर, में राजगद्दी पर आसीन हुए। शेखाजी के बाद, उनके पुत्र रायमल ने विक्रम संवत 1525 में शासन भार संभाला, जो उनकी सबसे छोटी संतान थे। ।

शेखावाटी के इतिहास में रायमल की महत्वपूर्ण भूमिका है।रायमल ने अकबर के दरबार में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की और गुजरात के आक्रमण के समय उसने अकबर की मदद करते हुए अपने शौर्य का प्रदर्शन किया। बादशाह ने प्रसन्न होकर रायमल को रैवासा और खंडेला की जागीर दी और 'राजा रायमल दरबारी' की पदवी प्रदान की।रायमल के बाद, उनका राज्य उनके पुत्रों में विभाजित हो गया।इस प्रकार, रायमल के पुत्रों ने शेखावत वंश की परंपरा को आगे बढ़ाया और अपने-अपने क्षेत्रों में शासन किया। भौजराजजी एक सुयोग्य शासक थे और उन्होंने उदयपुर में अपना शासन जमाया। वे शाही सेवा में आते जाते रहे और मुगल सम्राट जहाँगीर ने उन्हें नरहड़ और पाटन का अधिकार प्रदान किया। भौजराजजी बुद्धिमान और नीति निपुण थे, और उनकी बुद्धिमानी के कारण उदयपुर शेखावाटी का प्रधान स्थल माना गया।

भौजराजजी के बाद, उनके पुत्र टोडरमल उदयपुर की गद्दी पर बैठे। टोडरमल वीर पराक्रमी और मर्यादापालक थे, और उनकी दानशीलता की खूब प्रसिद्धि रही है। वि. सं. 1707 में उनका स्वर्गवास हो गया। उदयपुर की गद्दी जुझार सिंह को प्राप्त हुई, जिन्होंने वि. सं. 1709 में गुढा बसाया। उनके पश्चात जगरामसिंह गुढा के शासक हुए, जिनके दो पुत्र थे- शार्दूल सिंह एवं सलेदी सिंह। शार्दूलसिंह ने झुंझुनूं के नवाबों से युद्ध किया और झुंझुनूं पर अधिकार प्राप्त किया।

नवाब फाजिलखां की मृत्यु वि. सं. 1781 होने पर उसका पुत्र रोहिल्लाखां झुंझुनू का नवाब बना। उसकी शादी झुंझुनू परगने के नाथासर के बीका राजपूतों के यहां हुई थी। इसी समय सार्दुल सिंह ने संवत 1787 में झुंझुनू पर अपना राज्य स्थापित कर लिया।

उसी समय यह कहावत चलपड़ी थी

"इन्दै घाली डुमनी, तेलण धरी नबाब, सादा से वादा करें, जीतै किसो नबाब ?"

इन्द्रसिंह ने डूमनी रखली और नवाब ने तेलिन-फिर भी शार्दूल सिंह से झगड़ा करते हैं।

शार्दूलसिंह के बाद, उनका राज्य उनके छः पुत्रों में विभाजित हो गया, लेकिन एक पुत्र नरहड़ के पठानों की लड़ाई में मारा गया, इसलिए राज्य का बंटवारा शेष पांच भाईयों में हुआ। इसीलिए यह क्षेत्र पंचपाना के नाम से भी विख्यात है।शेखावाटी के इतिहास में खेतड़ी के योग्य शासक फतेहसिंह और अजीतसिंह का उल्लेख महत्वपूर्ण है। उन्होंने शासन में सुधार लाकर लोकप्रियता हासिल की। शेखावतों ने अपने राज्य का विस्तार किया, किंतु उत्तराधिकार के विभाजन के कारण केंद्रीय सत्ता कमजोर रही। इसके बावजूद संगठनात्मक शक्ति के कारण वे लंबे समय तक प्रभावी रहे।

मुगल काल में शेखावाटी

मुगल काल में शेखावत शासकों ने मुगल दरबार से सहयोगात्मक संबंध बनाए। रायमल एवं अन्य शासकों ने मुगलों की सहायता कर जागीरें एवं उपाधियाँ प्राप्त कीं।

सन् 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल सल्तनत कमजोर पड़ गई, और राजस्थान के साथ-साथ शेखावाटी पर भी इसका प्रभाव पड़ा। जयपुर अधिपति ने अपनी शक्ति में सुधार किया और शेखावाटी ठिकानों की अर्ध स्वतंत्रता समाप्त कर दी, लेकिन जल्द ही अंग्रेजों की कुटिल राजनीति और राज्यों की आपसी कलह से जयपुर का शासन कमजोर हो गया। इस प्रकार, शेखावाटी के शासकों ने अपनी योग्यता और संगठन क्षमता से अपनी शक्ति बनाए रखी, लेकिन बाहरी परिस्थितियों और राजनीतिक परिवर्तनों के कारण उनकी शक्ति और स्थिति में उतार-चढ़ाव आया।

अंग्रेजी शासन, किसान आंदोलन,स्वतंत्रता संग्राम एवं राजस्थान निर्माण

अंग्रेजी शासन काल में शेखावाटी प्रदेश पर अंग्रेजों का सीधा शासन नहीं था, लेकिन वे जयपुर राज्य के माध्यम से अपना प्रभाव रखते थे। 1878 की संधि के द्वारा जयपुर राज्य की रक्षा के नाम पर अंग्रेजों ने सम्प्रभुता छीन ली और शेखावाटी के ठिकानेदारों के हस्ताक्षर भी प्राप्त

किए। अंग्रेजों ने शेखावाटी की अव्यवस्था का उल्लेख करके अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ाया और धाड़ेती समस्या के समाधान के लिए शेखावाटी के किले तोड़े गए और स्थायी शान्ति के लिए 1834-35 में मेजर फोरेस्टर की अध्यक्षता में शेखावाटी ब्रिगेड संगठित की गई, जो बाद में जयपुर राज्य के अधीन हो गई।

इस प्रकार, शेखावाटी पर अंग्रेजों का सैनिक दृष्टि से शासन हो गया था, और वे जयपुर राज्य के माध्यम से अपना प्रभाव बनाए रखे। शेखावाटी के ठिकानेदारों का अंग्रेजों के साथ घनिष्ठ संबंध था। खेतड़ी के नरेश अभयसिंह ने 1806 में ईस्ट इंडिया कम्पनी को सैनिक सहायता प्रदान की और कोटपूतली का परगना उपहार में मिला। लेकिन जब आजादी की लड़ाई का बिगुल बजा, तो शेखावाटी में भी अंग्रेजों के खिलाफ विरोध होने लगा। शेखावाटी ब्रिगेड का विरोध हुआ और आम जनता में अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना जागृत हुई।शेखावाटी के ठिकानेदारों का भी अंग्रेजों के साथ साथ विरोध होने लगा।राजस्थान के जयपुर, अलवर, शेखावाटी, बीकानेर आदि क्षेत्र के कृषकों मे अंग्रेजी शासन के प्रति विरोध की भावना फैलने लगी। तात्या टोपे के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई का बिगुल बजा, और शेखावाटी के स्वतंत्रता सेनानियों ने जन आंदोलन को व्यापक बनाया।

1930 के दशक में प्रजामंडल आंदोलन एवं किसान संघर्षों ने राजनीतिक चेतना को व्यापक रूप से विकसित किया। प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में रामनारायण चौधरी, सेठ जमनालाल बजाज, और अन्य शामिल थे। 1931 में जयपुर में प्रजामन्डल की स्थापना हुई, और 1935-36 में शेखावाटी में किसानों का व्यापक आंदोलन हुआ। सीकर में जाट महायज्ञ किया गया, जो 10 दिन तक चला। 1938 में जयपुर और सीकर शासन के बीच संघर्ष हुआ, और अंग्रेज रावराजा माधौसिंह को गिरफ्तार करना चाहते थे। जनता ने उनकी रक्षा के लिए एकजुट होकर संघर्ष किया, जिसे जमनालाल बजाज ने अपनी सूझबूझ से शांत किया। यह घटना जनता की जागरूकता और एकता का प्रमाण है।

राजस्थान निर्माण से पहले, शेखावाटी के सीकर और खेतड़ी ठिकानों को मालगुजारी वसूल करने के लिए दीवानी और फौजदारी अधिकार प्राप्त थे। ठिकानेदारों की सहमति से पुलिस भी रखी जाती थी। हालांकि, अंग्रेजों का शेखावाटी पर सीधा शासन नहीं था, लेकिन अधिकांश ठिकानेदार अंग्रेजी शासन के समर्थक थे। यह परिस्थिति किसानों और जागीरदारों के बीच संघर्ष को बढ़ावा देती थी। किसान नेताओं ने जागीरदारों के अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई और किसानों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी। यह संघर्ष शेखावाटी क्षेत्र में सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन का कारण बना। शेखावाटी क्षेत्र में जागीरदारों और किसानों के बीच संघर्ष हुआ।

किसानों के नेताओं में सरदार हरलाल सिंह, नेतराम सिंह, नरोतम जोशी, लादूराम, ताड़केश्वर शर्मा, विद्याधर कुलहरि आदि प्रमुख थे। 15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के साथ, शेखावाटी क्षेत्र ने भी एक नए युग की शुरुआत की। इसके बाद, 30 मार्च 1949 को वृहत् राजस्थान का निर्माण हुआ, जिसमें शेखावाटी क्षेत्र भी शामिल हुआ।इसके साथ ही झुंझुनू जिला भी अस्तित्व में आया।

निष्कर्ष

झुंझुनू का इतिहास शेखावाटी क्षेत्र के समग्र ऐतिहासिक विकास से जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल से यह क्षेत्र व्यापारिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। मध्यकाल में कायमखानी और बाद में शेखावत शासकों ने यहां शासन स्थापित कर क्षेत्र को नई पहचान दी। मुगल और अंग्रेजी काल में भी झुंझुनू की राजनीतिक स्थिति में कई परिवर्तन हुए तथा किसान आंदोलनों और स्वतंत्रता संग्राम ने क्षेत्र में सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। स्वतंत्रता के बाद राजस्थान के गठन के साथ झुंझुनू एक प्रशासनिक जिले के रूप में स्थापित हुआ, जो इसके ऐतिहासिक और सामाजिक विकास की निरंतर प्रक्रिया को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

[1]. शर्मा, सुरेश. *शेखावाटी का स्वातंत्र्योत्तर साहित्य.* जयपुर: एम. बी. पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2004।

[2]. स्वामी, नरोत्तमदास. *बांकीदास की ख्यात.*

[3]. मिश्र, रतनलाल. *शेखावाटी का इतिहास.* 1984।

[4]. *झुंझुनू जिला गजेटियर.*

[5]. शर्मा, झाबरमल. *मरू भारती,* अंक 3।

[6]. शेखावत, रघुनाथ सिंह. *झुंझुनू मंडल का इतिहास.* काली पहाड़ी: श्री शार्दुल शेखावाटी इतिहास शोध संस्थान, 1981।

[7]. खां, लियाकत अली. *कायमखानी इतिहास एवं शौर्य.* जयपुर: विवेक पब्लिशिंग हाउस, 2023।

[8]. *वरदा,* राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ, मार्च 1983।

[9]. *मरू भारती,* संवत 2010, वर्ष 9, अंक 3 – *शेखावाटी के नवाबी राज्य और उनका अवसान।*

[10]. मिश्र, रतनलाल. *शेखावाटी का नवीन इतिहास.* मंडावा: कुटीर प्रकाशन, 1998।

[11]. शर्मा, झाबरमल. *खेतड़ी का इतिहास.* जयपुर: राजस्थानी ग्रंथागार, 2016।

[12]. *सेंसस हैण्ड बुक,* 1951।

[13]. गुप्ता, मोहनलाल. *जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन.* जयपुर: राजस्थानी ग्रंथागर, 2015।

[14]. पनगड़िया, बी. एल. *राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम.* जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2010।

[15]. शर्मा, हरिशंकर एवं सरोज पावा. *राजस्थान का इतिहास.* जयपुर: जयपुर पब्लिशिंग हाउस, 2011।

Cite this Article:

कुमार, रोहिताश (2026). शेखावाटी क्षेत्र के परिप्रेक्ष्य में झुंझुनू का ऐतिहासिक अध्ययन. *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), 4(3), 127–131.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v4i3.242*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.

© The Author(s) 2026. IJMRAST Published by Surya Multidisciplinary Publication.